'हिंदुत्व' ने की 'महानतम हिंदू' गाँधी की हत्या ! 'पाकिस्तान' की प्रतिक्रिया का दावा झूठा !

पंकज श्रीवास्तव

आज़ाद भारत की पहली आतंकवादी कार्रवाई थी गाँधी जी की हत्या। इस हत्या को 'जायज़' ठहराने के लिए दशकों से संघी दुष्प्रचार जारी है कि गाँधी जी आज़ादी के बाद पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये दिलाने के लिए अनशन कर रहे थे जिससे नाराज़ 'देशभक्त' नाथूराम गोडसे ने उनकी जान ले ली। गोया यह कोई तात्कालिक आवेश में किया गया कृत्य था। हद तो यह भी है कि लट्ठपाणियों के इस अहर्निश प्रचार का एक अंश यह भी है कि गोली मारने के पहले नाथूराम ने उनके चरण स्पर्श भी किए जो बताता है कि वह गांधी जी की कितनी इज़्ज़त करता था। गाँधी वध क्यों नाम की पुस्तिका आरएसएस से जुड़े संगठनों के दफ़्तरों से लगातार बेची गई। (ध्यान दें 'वध' शब्द का इस्तेमाल किया गया है जैसे पौराणिक कथाओं के देवता ने राक्षस को मारा हो!) हक़ीकत बिलकुल उलट है। गांधीजी को पहले भी चार बार मारने की कोशिश हुई थी। तब भी जब पाकिस्तान का विचार भी नहीं जनमा था।

1. गाँधी जी की जान लेने का पहला प्रयास पुणे में 25 जून 1934 को हुआ। वे नगर निगम में भाषण देने जा रहे थे लेकिन कार खराब हो गई जिससे पहुँचने में विलंब हो गया। उनके काफिले में शामिल दूसरी गाड़ियाँ जब सभास्थल पर पहुंचीं, तब उन पर बम फेंका गया।

2. गाँधी जी को मारने की दूसरी कोशिश 1944 में हुई और इसमें नाथूराम गोडसे भी

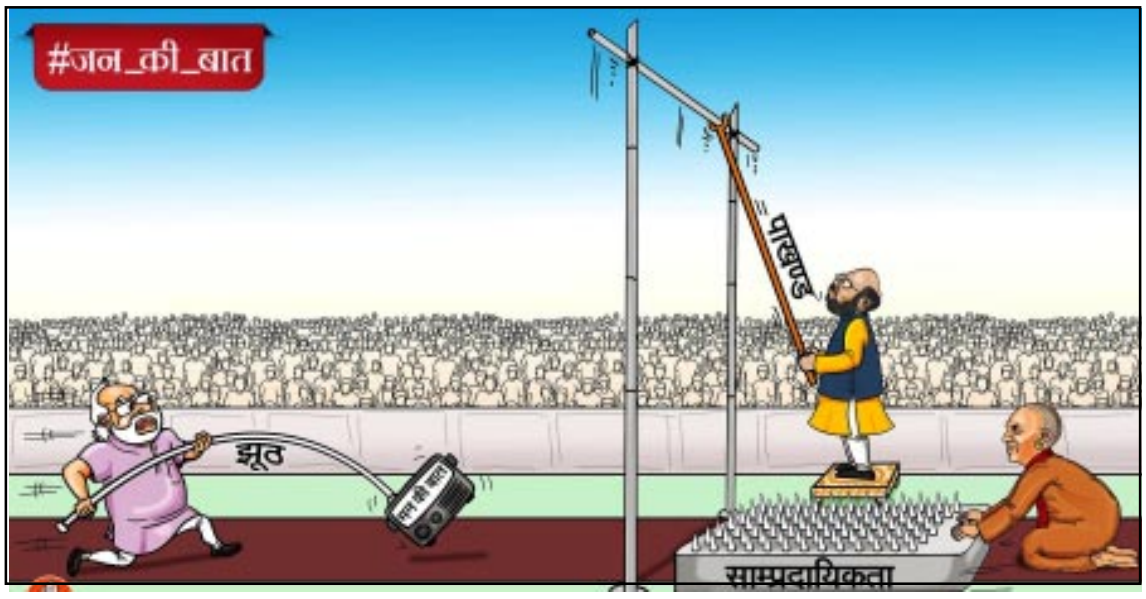

शामिल था। मई 1944 में गाँधी जी पंचगनी में थे। करीब 20 युवकों के जत्थे ने उनके खिलाफ दिन भर पर प्रदर्शन किया, लेकिन बुलाने पर गाँधी जी से मिलने नहीं गये। शाम को प्रार्थना सभा में हाथ में खंजर लिए नाथूराम गांधीजी की तरफ लपका लेकिन उसे पकड़ लिया गया।

3. सितंबर 1944 में जब जिन्ना के साथ गाँधीजी की बातचीत शुरू हुई, तब उन्हें मारने की तीसरी कोशिश हुई। गाँधी जी सेवाग्राम मुंबई जा रहे थे, तब नाथूराम के नेतृत्व में उन्हें रोकने की कोशिश की गई। उस वक्त भी नाथूराम के पास से से एक खंजर बरामद हुआ था।

4. गाँधीजी को मारने की चौथी कोशिश 20 जनवरी 1948 को हुई। इसमें शामिल थे मदनलाल पाहवा, शंकर किस्तैया, दिगम्बर बड़गे, विष्णु करकरे, गोपाल गोडसे, नाथूराम गोडसे और नारायण आपटे। मदनलाल पाहवा ने बिड़ला भवन स्थित मंच के पीछे की दीवार पर कपड़े में लपेट कर बम रखा था, जहाँ उन दिनों गांधी रुके थे। बम फटा लेकिन कोई हताहत नहीं हुआ। पाहवा पकड़ा गया। समूह में शामिल अन्य लोगों को भगदड़ के बीच गाँधीजी पर गोलियां चलानी थीं, लेकिन शायद वे डर गए।

आखिरकार पाँचवीं कोशिश में षड्यंत्रकारी सफल हुए और 30 जनवरी 1948 को गाँधी जी की हत्या कर दी गई। आरएसएस और हिंदू महासभा से दीक्षित नाथूराम गोडसे ने इस कुकृत्य को अंजाम दिया था। उसे गोली चलानी आती थी लेकिन इस "देशभक्त" ने किसी अंग्रेज़ को कभी कंकड़ से भी नहीं मारा था। गोडसे, सावरकर का शिष्य था जो खुद भी गाँधी जी की हत्या के षड्यंत्र में शामिल थे। मुकदमें उनके ख़िलाफ़ गवाही भी हो गई थी, लेकिन उसकी पुष्टि करने वाला दूसरा गवाह न मिलने की वजह से तकनीकी कारणों से वे छोड़ दिए गये। बहरहाल, साठ के दशक में जस्टिस जीवनलाल कपूर आयोग इस नतीजे पर पहुँचा कि सावरकर की योजना के तहत ही गाँधी की हत्या हुई।

सावरकर ने 1923 में 'हिंदुत्व' नाम की किताब लिखी थी जो एक तरह से अंग्रेजों से मिली 'दया रिहाई' का प्रतिदान था। सावरकर ने बाकायदा अंग्रेज़ों से माफी माँगकर अंडमान की सेल्युलर जेल से रिहाई हासिल की थी। जीवन के पहले दौर में क्रांतिकारी सावरकर हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे, लेकिन अब अंग्रेज़ी नीति के अनुसार हिंदुओं और मुसलमानों के बीच युद्ध कराने को जीवन का लक्ष्य बना बैठे थे।

सावरकर ने ना सिर्फ जिन्ना के द्विराष्ट्रवादी सिद्धांत का समर्थन किया था बल्कि हिंदू महासभा के अध्यक्ष के नाते इसे परवान भी चढ़ाया था। आरएसएस लगातार अंग्रेज़ों का साथ देने की नीति पर चलता रहा।

उधर, गाँधीजी खुद को वैष्णव कहते थे जिसकी कसौटी ही 'पराई पीर' को अपना समझना था। वे अहिंसा को मंत्र बनाकर दुनिया के सबसे ताकतवर साम्राज्य के ख़िलाफ भारत की जनता को जागृत कर रहे थे। लेकिन सावरकर का 'हिंदुत्व' ऐसे किसी हिंदू को बरदाश्त करने के लिए तैयार नहीं था जो शांति, समन्वय और अहिंसा की बात करे। जो ईश्वर के साथ अल्लाह का नाम लेने का 'गुनाह' करे।

आख़िरकार 'हिंदुत्व' ने दुनिया के सबसे सम्मानित हिंदू की जान ले ली। सरदार पटेल ने ख़ुफ़िया रपटों के आधार पर लिखा था कि आरएसएस ने महात्मा गाँधी की हत्या के बाद मिठाई बँटवाई। आरएसएस और हिंदू महासभा के बनाए माहौल ने महात्मा की जान ले ली। उन्होंने आरएसएस पर प्रतिबंध लगा दिया। यह प्रतिबंध तभी हटा जब आरएसएस ने लिखित संविधान बनाने और केवल सांस्कृतिक संगठन बतौर काम करने का शपथपत्र दिया।

किताब बिना जीवन...

भावना सहवाग

''मैं किताबों के बगैर जिंदा नहीं रह सकता हूं।'' अमेरिकी राष्ट्रपति थॉमस जेफर्सन जैसे प्रबुद्ध विचारक का यह कथन किसी प्रेमी का अपनी प्रेमिका के लिये बोला कोई सामान्य सा जुमला नहीं है। यह कथन सत्य है उन के लिये जो पुस्तक को अपना दोस्त, प्रेमी सब मानते हैं। ऐसे ही एक शायर जॉन एलिया कहते हैं कि,

''तुम्हें मेरा कमरा सजाने का शौक है, लेकिन मेरे कमरे में किताबों के सिवा कुछ नहीं है।'' ऐसी ही कुछ किताबों के लिये जुनून रखने वाली महिलायें 2019 के विश्व पुस्तक मेले में भी अपनी मनपसंद किताबें लेने आई थीं। उनसे बातचीत करने पर जान पड़ा कि उन्हें उनकी पसंद की किताबें बहुत कम मिल रही हैं। प्रिया, सुधा, कमला नेहरू कॉलेज की दो छात्राओं से बात करने पर पता चला कि वे हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी हैं और अपने विषय की किताब लेने आई हैं लेकिन एक किताब 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के अलावा उन्हें कुछ नहीं मिला। कुछ पीएचडी की छात्रायें जो अपने शोध विषय पर किताबें ढूंढ रही थीं हॉल के बाहर एक दरी पर बैठी थीं। पूछने पर पता चला कि वो शोध के लिये किताबें लेने आई हैं लेकिन इस बार इतनी कम और सीमित किताबें हैं कि पचास प्रतिशत, किताबें भी नहीं मिलीं। साथ में बैठी एक मोहतरमा बोलीं, पता नहीं रोज अखबार में देख रहे हैं ये किताबें आई हैं, उस किताब का विमोचन हुआ है, आज 10 का हुआ है लेकिन एक भी किताब पढने लायक नहीं।

यह बात तो मैं भी अपने अनुभव से कह सकती हूँ कि वो मोहतरमा तनिक भी गलत नहीं है। मैं अपने एक मित्र के बुक स्टॉल पर बैठी थी उसने मुझे एक किताब दी जो गलती से कोई वहीं छोड़ गया था 'गांव-गांव की कहानियां'। उसमें एक कहानी 'प्रधान की प्रेमिका' कहानी पढ कर मैंने देखा कि किताब का इस साल ही विमोचन हुआ है। ऐसी स्तरहीन कहानियां सच में पढी जा सकती हैं ? मन में सवाल अभी भी है।

हॉल 12 ए के कबीर साहित्य स्टॉल के बाहर खड़ी मैं बहुत वक्त तक वहां खड़े व्यक्ति की किताबें बेचने की कला को देख रही थी। कबीर का साहित्य केवल साखी, सबद रमैनी से इतना विस्तृत हो गया ? वह व्यक्ति कब वहां खड़े लोगों से कबीर के व्यक्तित्व की ऐसी गढी बातें बता रहा था जो शायद ही कबीर का व्यक्तित्व कभी स्वीकार करता हो।

धार्मिक किताबों से भरे स्टालों के बाहर भीड़ का ताता देखने लायक था। लोग माथे से लगा लगाकर किताबें उठा रहे थे। हिन्दी हॉल से बाहर निकलकर मैं अंग्रेजी माध्यम वाले हॉल के बाहर पहुंची। वहां एक 50 साल से ऊपर के उम्र की महिला से बातचीत में पता चला कि यह दुर्दशा केवल हिन्दी की नहीं, अंग्रेजी का भी यही हाल है।

किताबों के प्रति प्रेम की डोर हर व्यक्ति को अपनी ओर खींच लाती है। किताबें पढ़ने का शौक हमारे अंदर नई चीजें जानने, समझने बेहतर करने का साधन है। कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा से लेकर मन्नू भंडारी जैसी लेखिका अपनी लेखनी से दुनिया के मुखौटे की सच्चाई को तो आगे लाती रहीं, साथ ही इनका प्रेम ही किताबों के लिये दुनिया से हटकर था। जैसे अमृता प्रीतम कहती थी, ''जब मैं साहिर की यादों में जाती थी तो मुझे केवल ये किताबें ही बाहर निकाल कर ला सकती थीं।''

किताबों के प्रति स्त्रियों का जुड़ाव पुरुषों की अपेक्षा अधिक नज़र आया है। चाहे वो बात किसी खाने बनाने वाली किताब की हो या धार्मिक ग्रंथ । कारण इसका ये भी रहा है कि किताबें औरतों को उस बाहर की दुनिया को समझने या महसूस करने या कह सकते हैं कि सपने देखने का ऐसा मौका देती हैं जिसे वे चाहकर भी नहीं जी सकतीं। घर में काम करती एक महिला जो गायक बनना चाहती है वह ऐसे गायकों के फ़ोटो या बायोग्राफ़ी पढ़ती है, जिसमें वो खुद को देखना चाहती है।

कुंभ- दिव्यता और भव्यता के पीछे का अंधेरा

सुशील मानव

'दिव्य कुम्भ भव्य कुम्भ' जी हाँ इसी टैगलाइन के साथ आस्था के आंगन में बाज़ार सजा है. पर अखिल भारतीय सर्वब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष पंडा कृष्ण बहादुर शर्मा मननगुरु के मुताबिक ये भव्यता, ये दिव्यता सिर्फ संगम स्थल से अरैल पुल तक है. सारा वीआईपी इंतजाम उधर ही है. जिसे सजाने-संवारने में अरबों रुपये पानी की तरह बहा दिए गए.

पंडा मननगुरु कहते हैं कि देश दुनिया के सारी मीडिया उस भव्यता और दिव्यता पर इतनी मंत्रमुग्ध है कि उसे कल्पवासियों की खोज-खबर तक लेने की ज़रूरत ही नहीं जान पड़ती, आप ही जाने कहां से भूल-भटककर आ गए हैं.

पंडा मननगुरु जी आगे कहते हैं कि योगी-मोदी सिर्फ बड़े बड़े मठाधीशों को वरीयता दे रहे हैं. जबकि हम जैसों को अपने सामान्य जनों को दो-दो दिन तक लाइन लगाने के बाद भी रहने का सामान नहीं मिला है. वो बताते हैं कि 23 जनवरी की रात भारी बारिश के चलते उन लोगों का सारा ओढ़ना-बिछौना भीग गया. पंडाजी केंद्र और राज्य सरकार पर गुस्सा जताते हुए कहते हैं हमारी संस्था के एक लाख 35 हजार लोग माघ-मेला से लौटने के बाद बीजेपी से सामूहिक इस्तीफा दे देंगे. मननगुरू कहते हैं कि ये सरकार सिर्फ बड़े बड़े मठाधीशों और पूंजीपतियों का हित साधनें में लगी हुई है.

परेशान हैं कल्पवासी

कल्पवासी (संगम के तट पर रहकर ध्यान करने वाले) माघमेला की जान हैं. जो सालों-साल से लगातार बज्जर ठंड और पाथर-पानी में भी अपना घर-बार छोड़ गंगा किनारे महीने भर के लिए कल्पवास करने चले आते हैं. बिना शासन प्रशासन से कोई भारी उम्मीद या शिकवा शिकायत के. लेकिन दिव्यता और भव्यता के तमाम वादों के बावजूद कल्पवासियों को कोई सुविधा नहीं मिल पा रही है.

10-12 टेंट के बीच सिर्फ दो शौचालय उपलब्ध करवाए गए हैं. इन शौचालयों में पर्दे तक नहीं हैं. लोग लड़-झगड़कर चिरौरी-विनती करके किसी तरह जुगाड़ कर करके रह रहे हैं. कई कल्पवासियों ने तो अपनी साड़ी या चादर लपेटकर इन शौचालयों के इस्तेमाल करने लायक बनाया है. कल्पवासियों का ये भी आरोप है कि ठंड से बचने के लिए अलाव जलाने के लिए लकड़ी तक नहीं उपलब्ध कराई गई है. जबकि बाजार में लकड़ियां महंगे दाम में बिक रही हैं.

वीरभानपुर प्रतापगढ़ से कल्पवास करने आई रंजन मिश्रा जी कहती हैं कि सरकार किसी की भी हो मेला का ठेका लल्लू लाल एंड संस को ही मिलता है. बता दें कि रंजन मेला क्षेत्र में पति संग कल्पवास कर रही हैं. ठेकेदार लल्लू लाल की ओर से जो टेंट मुहैया करवाया गया है वो बेहद जर्जर और जगह जगह से फटा हुआ है. इन्हीं कटे-फटे टेंट में चोर-उचक्के हाथ डालकर कई टेंटों के भीतर से कल्पवासियों के मोबाइल जैसे कीमती सामान और रुपया पैसा साफ कर चुके हैं.

वहीं बगल के ही टेंट में रंजन मिश्रा के बूढ़े-माता भी कल्पवास कर रहे हैं. प्रयागराज में आज सुबह भी बारिश हुई है, ओले गिरे हैं. कई टेंटों के भीतर तक पानी गया है. कछार क्षेत्र में चिकनी मिट्टी होने की वजह से जगह जगह टेंट के आस पास और चकर प्लेटयुक्त रास्तों पर कीचड़ लगने से रास्तों में फिसलन हो रही है. जिससे फिसल फिसल कर लोग चोटिल हो रहे हैं. बारिश के बाद से तो बूढ़े-बुजुर्गों का टेंट के बाहर निकलना दूभर हो गया है. लोग कह रहे हैं गर यही टेंट बलुवार माटी में लगा होता तो इतनी परेशानी न होती हर चीज का दाम दोगुना बढ़ गया है.

गोरखपुर से आई मालती कहतीं है कि आग लगे ऐसी दिव्यता और भव्यता को जिससे सुविधा तो कुछ नहीं मिली उल्टे महंगाई दोगुनी बढ़ गई है. वहीं पिछले 15 वर्षों से लगातार कल्पवास करनेवाली रामकली बताती हैं कि अबकी बार टेंट का किराया पिछली बार से दोगुना ज्यादा लिया गया है. पिछली बार जहां एपी (मझोले) टेंट का किराया 5000 रुपये था वहीं अबकी बार दस हजार रुपये कर दिया गया है. जबकि छोलदारी टेंट (एकदम छोटे टेंट) का किराया पिछली बार 1000 रुपये था जिसे बढ़ाकर 3000 रुपये कर दिया गया है. पिछली बार शौचालय का किराया 1000 रुपये था जिसे इस साल बढ़ाकर 2000 रुपये कर दिया गया है. बिजली प्रति यूनिट 225 रुपये ली जा रही है. प्रति यूनिट का आशय यहां टेंट में जलने वाले प्रति बल्ब से है.

कल्पवासियों को इस बार मेला क्षेत्र से बहुत दूर रहने की जगह दी गई है. उन्हें संगम नहाने के लिए चार से 11 किलोमीटर तक पैदल चलकर जाना पड़ता है. लेकिन पर्व के दिन उन्हें प्रशासन संगम नहाने नहीं जाने देता. पिछले कई वर्षों से गोरखपुर के सहजनवा से बस बुक करके दर्जनों कल्पवासियों के साथ कल्पवास करने आने वाली कमला देवी कहती हैं कि उन्हें गठिया की बीमारी है. संगम नहाने के लिए इतनी दूर वो पैदल नहीं चल पाती है.

वो शिकायत करती हैं कि उतनी दूर से आने के बाद भी संगम नहीं नहा पाती हूँ क्योंकि उनका टेंट संगम तट से छह किलोमीटर दूर गंगा के कछार में मिला है. सीतादेवी अपने गुस्से का इजहार करती हुई कहती हैं कि अबकि बार सिज्जादान करके गंगा मैय्या से हाथ जोड़ लूंगी. सैंकड़ों किलोमीटर दूर से आने के बाद भी जब उन्हें संगम नहाने के को नहीं मिल रहा है तो अब यहां आने से क्या फायदा ?

कई दिनों तक पड़ा रहता है कूड़ा

14 नंबर पुल के पास के टेंट में रहकर कल्पवास कर रहे गजोधर सुकुल बताते हैं कि तीन-तीन दिन कूड़े पड़े रहते हैं कोई कूड़ा उठाने नहीं आता. आस-पास झाड़ू भी नहीं लगती है कई दिन. हेमा देवी बताती हैं कि दो-तीन दिन बाद गर कोई सफाईकर्मी आता है और हम उससे शिकायत करते हैं तो वो कहता है कि इतना बड़ा मेलाक्षेत्र है कहां कहां हम अंटे.

कई साल से लगातार कल्पवास करते आ रहे नैनी के 76 वर्षीय कमला कांत मिश्रा 76 बताते हैं कि जो भी वजह हो इस बार सफाईकर्मियों में एक तरह की हताशा साफ दिखती है पहले हम इन्हें कुछ खाने-पीने को देकर ये काम करवा लेते थे. लेकिन इस साल ये इतने बेदम और हताश दिखते हैं कि लालच देने पर भी खुश नहीं लगते.

राशन के लिए दिन भर लाइन में

योगी सरकार ने कल्पवासियों को आटा, चावल चीनी और मिट्टी का तेल देने के लिए पूरे मेला परिसर में खाद्य और रसद विभाग के छह डिपो और 160 सस्ते दाम की राशन की दुकानें खोलने का दावा किया था. इसे कई अख़बारों ने बढ़ा-चढ़ाकर पेश भी किया था. पर जमीनी हक़ीकत ये है कि लोगों को राशन के लिए अपने टेंट से कई किलोमीटर दूर जाना पड़ता है. साथ ही राशन पाने के लिए दिन भर लाइन में लगना पड़ता है.

सुनीता देवी बताती हैं कि हमारा कार्ड ही नहीं बन पाया है. दरअसल कल्पवासियों को राशन कार्ड बनवाने के लिए अपने पंडों को लिवाकर जाना पड़ता है. कई बार पंडे दुकान पर बहुत भीड़ होने के चलते कल्पवासियों से टाइम न होने का भी बहाना बनाकर टाल देते हैं. पंडा रामनारायण बताते हैं कि मैं अब उम्रदराज हो चला हूं फिर भी दो दिन पहले तीन लोगों का कार्ड बनवाकर आया हूँ. अब हर टेंटवाले के साथ बार-बार दुकान पर जाना संभव नहीं है.